سُورَةُ التِّينِ

Surah 95 — At-Tin (The Fig) · Meccan · 8 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِّسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ وَٱلتِّينِ وَٱلزَّيْتُونِ

इन्जीर और ज़ैतून की क़सम

2

وَطُورِ سِينِينَ

और तूर सीनीन की

3

وَهَٰذَا ٱلْبَلَدِ ٱلْأَمِينِ

और उस अमन वाले शहर (मक्का) की

4

لَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ فِىٓ أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ۝

कि हमने इन्सान बहुत अच्छे कैड़े का पैदा किया

5

ثُمَّ رَدَدْنَٰهُ أَسْفَلَ سَٰفِلِينَ

फिर हमने उसे (बूढ़ा करके रफ्ता रफ्ता) पस्त से पस्त हालत की तरफ फेर दिया

6

إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ۝

मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे (अच्छे) काम करते रहे उनके लिए तो बे इन्तेहा अज्र व सवाब है

7

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِٱلدِّينِ

तो (ऐ रसूल) इन दलीलों के बाद तुमको (रोज़े) जज़ा के बारे में कौन झुठला सकता है

8

أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِأَحْكَمِ ٱلْحَٰكِمِينَ

क्या ख़ुदा सबसे बड़ा हाकिम नहीं है (हाँ ज़रूर है)

Generated by Dailica — dailica.com